विचार बिन्दु

हृदय की विशालता ही उन्नति की नींव है। –जवाहरलाल नेहरु

जीवन कौशल को नई शिक्षा के विमर्श में शामिल करना जरूरी

जीवन को ठीक से जीना भी कौशल होता है और आजीविका पाना और उसे बनाए रखने का भी कौशल होता है। अमूमन दोनों को एक ही मान लिया जाता है। परंतु ऐसा है नहीं। आजीविका का कौशल आय के अर्जन का संबल देता है। वह जीवन के आर्थिक पहलू से जुड़ा कौशल होता है। उससे व्यक्ति को अपने स्वयं की और अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलती है। यह व्यवसाय के हुनर की शिक्षा होती है जिसमें वह ऐसे कौशल प्राप्त करता है जो उसकी कमाई में इज़ाफ़ा करे, उसके लिए बेहतर रोजगार के अवसर मुहैया कराये। जबकि जीवन कौशल में मानव जीवन के सभी पक्ष चाहे वो आर्थिक हो, सामाजिक हो या मनोवैज्ञानिक हो, उसमें शामिल होते हैं। जीवन कौशल का फ़लक अत्यंत व्यापक होता है। इसमें व्यक्ति सबसे पहले तो ज्ञान को अर्जित करना सीखता है। फिर उस ज्ञान का उपयोग करना सीखता है। जीवन कौशल के ज्ञान का उपयोगजीवन के अनेक आयामों में होता है। उसका उपयोग आजीविका के हुनर हासिल करने के लिए के लिए भी होता है तो उससे मनुष्य अपनी क्षमताओं और संभावनाओं को समझने और उन्हें विस्तार देने, अपने जीवन को आनंददायी, संतोषपूर्ण और अर्थवान बनाने तथा अपने व्यावहारिक आचरण तथा रचनात्मकता से अपने को समाज के लिए उपयोगी बना पाने के लिए भी होता है। जीवन कौशल व्यक्ति के अपने दृष्टिकोण को सही करने और अपने नैतिक चरित्र को तराशने में भी मदद करता है। जेंण्डर की समझ और महिला व पुरुष के बीच की गैर बराबरी के आयामों को समझ कर दोनों के बीच के सदियों पुराने शोषणपूर्ण संबंधों को सुधारने की भी राह जीवन कौशल से सीखी जा सकती है। इसीलिए अब जीवन कौशल की शिक्षा की बात की जाती है।

हर युग का अपना समय होता है। हर समय की अपनी मांग होती है। इसीलिए समय के साथ मानव की आवश्यकताएं, अपेक्षाएं और आकांक्षाएं भी बदलती रहती हैं। इक्कीसवीं सदी का मौजूदा समय यंत्र तकनीक के जबर्दस्त फैलाव का युग है। हम पाते हैं कि यंत्र तकनीक में तेजी से आ रहे निरंतर बदलाव हमारे आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर गहन रूप से असर डाल रहे हैं। इसी कारण जीवन कौशल के भी नए-नए आयाम हमारे सामने खुलते जा रहे हैं। इसके मूल में बेहतर जीवन जीने की कला हासिल करना जीवन कौशल की शिक्षा है। एक प्रकार से जीवन की समठा समझ को आत्मसात करना ही जीवन कौशल की शिक्षा का उद्देश्य होता है। इक्कीसवीं सदी के जीवन कौशल के प्रमुख घटक हैं आलोचनात्मक सोच का विकास, स्थितियों का विश्लेषण, उनकी विवेचना और समस्याओं के हल की योग्यता, विवेकशीलता तथा सूचनाओं का संश्लेषण करने की क्षमता, प्रश्न करने का उत्साह, और नया खोजने की ललक। इनके अलावा रचनात्मकता, कलात्मकता, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, नवोन्मेष, अभिव्यक्ति की क्षमता, दृढ़ता वाला धीरज, अपनी राह चुनने की कुव्वत,स्व-अनुशासन, परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने का लचीलापन और पहल करने की इच्छाशक्ति भी जीवन कौशल के ही घटक हैं। इनमें मौखिक और लिखित संवाद, सार्वजनिक रूप से अपनी बात कहना और रखना तथा दूसरे की बात सुनने का धैर्य भी जीवन का कौशल होता है। साथ ही एक टीम के रूप में काम करना, नेतृत्व देना, आपसी सहयोग और सहकार भी इसनें शामिल होते हैं। जीवन कौशल में नागरिक दायित्व, नैतिक चरित्र, अहिंसा, और सामाजिक न्याय की शिक्षा भी शामिल होती है। इसमें आर्थिक और वित्तीय साक्षरता, उद्यमशीलता के साथ-साथ वैज्ञानिक सोच और मनोवृत्ति के साथ वैश्विक जागरूकता, बहुसांस्कृतिक समझ और मानवीयता भी शामिल हैं। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और पर्यावरण के संरक्षण और पारिस्थितिक की समझ भी स्वाभाविक रूप से जीवन कौशल में शामिल होती है। कुल मिला कर कह सकते हैं कि जीवन कौशल की शिक्षा मनुष्य के जीवन को आनंदमय और प्रेममय बनाती है जिसमें बंधुत्व की भावना अंतर्निहित होती है। ऐसे जगत की रचना होती है जहां संघर्ष न हो, एक दूसरे के नज़रिये को सुनने, समझने और अपने से भिन्न के अस्तित्व की स्वीकार्यता हो।

जिस प्रकार से सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियां बदल रही हैं, जिसमें यंत्र तकनीक का जबर्दस्त प्रभाव बढ़ा है, उससे जीवन की अपेक्षाएं और आकांक्षाएं भी समग्र रूप से बदल रही हैं। यह बदला हुआ परिदृश्य नई चुनौतियां उपस्थित कर रहा है।

किशोर-किशोरियों की जीवन कौशलकी शिक्षा के लिए पाठ्य पुस्तकों का उपयोग हो सकता है और वह वांछनीय भी है। परंतु जीवन कौशल की शिक्षा अनुभवजनित हो तो वह अधिक प्रभावी होती है क्योंकि अनुभव से प्राप्त हुआ ज्ञान ही वास्तविक शक्ति है। वह टिकाऊ होता है। शिक्षा मात्र उपदेश नहीं होती। ज्ञान और व्यवहार में सामंजस्य बिठाना ही शिक्षा का कौशल है। असली शिक्षा वह है जो न केवल जीवन के संघर्षों से रूबरू कराए बल्कि उन पर विजय पाने की राहें खोजने में मदद करे। जीवन कौशल की शिक्षा औपचारिक शिक्षण की सीमाओं के परे जाकर होती है। वह व्यावहारिक होती है। इसलिए औपचारिक शिक्षा की मूल्यांकन प्रक्रिया से उसे नहीं आंका जा सकता। जीवन कौशल की शिक्षा मानव के रूपान्तरण का काम भी करती है। इसमें उसकी चेतना को उत्प्रेरित करना पड़ता है। जीवन कौशल की शिक्षा मनुष्य को स्वतंत्र करती है। इसके लिए पहले वह उस व्यक्ति की चेतना से, तब तक के उपार्जित ज्ञान को पौंछती है जिसके चलते वह रूढ़ियों और अवैज्ञानिक सोच और व्यवहार की जकड़न में होता है तथा नए समय की चुनौतियों से मुक़ाबला कर पाने में सक्षम नहीं हो पाता। जीवन कौशल पाना एक व्यवस्थित वैचारिक परिघटना है जिसे व्यक्ति प्रयास और अभ्यास से अर्जित करता है। किसी नए अनुभव को अपने पुराने अनुभवों और ज्ञान से जोड़ कर समझने की सामर्थ्य भी एक प्रकार का कौशल ही है। कौशल की शिक्षा सिखाती है कि क्योंकि अंतरवैयक्तिक रूप से वह स्वयं भी जुड़ा होता है इसलिए आवश्यक है कि वह तटस्थ तथा भावनाओं से निरपेक्ष रह कर चीजों को देखे, समझे और उनका विश्लेषण करे। जीवन कौशल की शिक्षा रोज़मर्रा के सरोकारों, खानपान, सेहत, सौंदर्यबोध और मानवीय व्यवहार को भी छूती है। वह व्यक्ति को अज्ञान के अंधेरे से ज्ञान के उजाले की ओर ले जाती है।जीवन कौशल की शिक्षा ज्ञान की उजास को व्यक्ति के व्यवहार में लाती है। यह व्यवहार सकारात्मक होता है नकारात्मक नहीं। वास्तव में जीवन का कौशल वही है जिसमें ऐसी सकारात्मक ऊर्जा संचारित होती है जो उस व्यक्ति को ही नहीं बल्कि उसके परिवेश को भी सुहासित करती है क्योंकि वह सामाजिक रूप से वांछित होती है। जीवन शिक्षा में भौतिक कौशल से भी बढ़ कर विचार की अहमियत होती है। ऐसा इसलिए कि मनुष्य का व्यवहार ही उसके जीवन की राहें तय करता है। जीवन कौशल सिखाता है कि मनुष्य एक वृहद मानव समाज का ही नहीं सम्पूर्ण प्रकृति का हिस्सा है और अस्तित्व का एक धागा है जो समस्त चराचर जगत को एक सूत्र में जोड़ता है। वह जान पाता है कि प्रकृति की हर चीज का अपना अस्तित्व है जिस पर कोई आंच समूचे जगत के अस्तित्व पर असर डालती है।

पिछली सदी में जिन कौशल से हमारा काम चल जाता था वे अब पुराने पड चुके हैं। वे तब के समय की मांग थे। आज का समय अलग भांति के जीवन कौशल की जरूरत व्यक्त करता है। यह समय अधिक जटिल और अधिक प्रतियोगी है। यह ज्ञान आधारित सूचना का युग है जो यंत्र तकनीक से संचालित हो रहा है, वह चाहे समाज हो या अर्थ व्यवस्था हो। जीवन कौशल व्यवहार का हुनर होता है। सिर्फ मानव ऐसा प्राणी है जो प्रयास करके अपने पुराने विश्वासों की जकडन से बाहर आ सकता है। यह उसकी विशेष क्षमता होती है। असली जीवन कौशल यही होता है कि व्यक्ति अपनी इस क्षमता को पहचाने और विगत के बंधनों को तोड़ कर वर्तमान में आ सके। या कहें कि नई-नई संभावनाओं को रचना ही असली जीवन कौशल है। वह जान सके कि जीवन का हेतु क्या है? इस प्रकार जीवन कौशल मनुष्य को अपूर्णता के एहसास से बाहर निकालता है। जीवन अनंत काल का नहीं होता। उसकी एक सीमा है। जीवन कौशल सिखाता है कि मृत्यु और दु:ख सर्वव्यापी है और जीवन की सच्चाई है, मगर वे जीवन को अर्थ भी देते हैं। जीवन कौशल पुराने विश्वासों को नए सकारात्मक विश्वासों में रूपांतरित करने की कला सिखाता है। नई संभावनाओं को देखने का आकाश खोलता है।

जीवन कौशल किशोर और किशोरियों के लिए अलग-अलग नहीं होता। जीवन कौशल दोनों को पूर्व धारणाओं से मुक्त करता है ताकि दोनों समान रूप से अपनी संभावनाएं खोज सकें। अनुभव बताता है कि स्कूल आधारित एकरूप शिक्षा जीवन के यथार्थ से सामना करने में छात्रों को मदद नहीं करती। जिस प्रकार से सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियां बदल रही हैं जिसमें यंत्र तकनीक का जबर्दस्त प्रभाव बढ़ा है उससे जीवन की अपेक्षाएं और आकांक्षाएं भी समग्र रूप से बदल रही हैं। यह बदला हुआ परिदृश्य नई चुनौतियां उपस्थित कर रहा है। एक तरफ नई आकांक्षाओं, परम्पराओं और सामाजिक बंधन हैं तो दूसरी तरफ आर्थिक दबाव हैं और व्यक्ति को दोनों के बीच संतुलन बनाए रखने की प्रबल चुनौती है। इस प्रमुख मुद्दे का हल खोजनाही आज शिक्षा के संवाद की आवश्यकता है। जीवन कौशल में वे सभी चीजें शामिल हैं जो मानव के जीवन को उपयोगी, आनंददायी और सुखदायी बनाने के लिए आवश्यक हैं। इसमें सतत शिक्षा अति महत्वपूर्ण हो जाती है। तेजी से बदल रहे ज्ञान से अपने को अध्यतन रख कर तथा विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान का आपसी मिलाप करके कोई अपनी अनंत संभावनाओं के नए क्षितिज पा सकता है। यह हमारी नई शिक्षा के विमर्श का आवश्यक अंग होना चाहिए।

– अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

दुख बांटने का सुख

लाइलाज हुए कैंसर रोगियों की सेवार्थ बने अवेदना आश्रम के कमरे में चटाई बिछाये बैठी श्रीमती अग्रवाल। सामने धर्म की कोई किताब खुली है, जिस में से पढ़ कर वे अपने पति को सुना रही हैं। भगवान के चित्र के सामने दीपक जल रहा है, अगरबत्ती महक रही है। पाठ के पश्चात वे आरती करेंगी, अपने पति को आरती देंगी और फिर चली जायेंगी आश्रम के अन्य रोगियों की देखभाल करने।

श्रीमती अग्रवाल विलक्षण महिला हैं। उनके पति जो सामने बैठे हैं समृद्ध व्यापारी हैं। उनको नाक के पास एक घाव हुआ था। इलाज से ठीक नही हुआ तो जांच करवाई, कैंसर निकला। शल्य चिकित्सा कर उसे हटाया गया। सेक हुआ, दवायें दी गई। लेकिन कैंसर वहीं वापस आ गया। लाइलाज था। कैंसर धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। नाक के एक ओर का भाग, ऊपर का ओंठ और गाल पर फैल गया। अग्रवाल साहब अपने घर में रह कर अपने कमरे से ही व्यापार चलाते। दुर्भाग्य से कभी जब वे सोये हुए थे, घाव पर मक्खी ने बैठ कर अंडे दे दिये। अंडो से निकल कर छोटी-छोटी लटे घाव में फैल गई, घाव में इधर-उधर छुप कर कुलबुलाने लगी। चेहरा विकृत तो पहले से ही था अब तो स्थिति असहनीय हो गई। बेचैनी, नीद नहीं, असहनीय व्यथा।

अग्रवाल साहेब अवेदना आश्रम आ गये। श्रीमती अग्रवाल साथ थी। आश्रम की नर्सो के अथक परिश्रम से स्थिति संभली। नर्सें घाव को साफ करती, दवा लगाती जिसके प्रभाव से हो लटे बाहर आती और वे उन्हे चुन-चुन कर हटाती। ऐसी कोई दवा नहीं थी जिसको लगाने से सारी लटे एक बार में ही मर जाती, कारण जो दवा लटों को मारती वह घाव के नाजुक तंतुओं को भी नष्ट कर देती। दो दिन लगे घाव को लटे मुक्त करने में। इसके पश्चात ही अग्रवाल साहेब चैन से सो सके। श्रीमती अग्रवाल वहीं रहीं, सतत उनकी देखभाल करने के लिए। अग्रवाल साहेब सामान्य हो गये तो भी न तो वे स्वयं घर जाने को तैयार हुए और न ही उन्हें छोड़ कर जाने को श्रीमती अग्रवाल।

बढ़ते कैसर के घाव से चेहरा कितना विकृत हो गया था इसका अंदाज आप इससे लगा सकते हैं कि एक संभ्रात आंगतुक आश्रम में इनके कमरे में गये। कमरे में जाने से पहले बड़े वचाल थे। लाइलाज कैंसर के रोगियों के बारे मे बोले जा रहे थे। कमरे में घुसने पर एक नजर अग्रवाल साहेब के चहरे पर पड़ी और जैसे उन्हे काठ मार गया। फटी आंखे से उन्हे देखते रह गये। तो समझ में ही नहीं आया कि यह आदमी कैसे शांत चित बैठा है। श्रीमती अग्रवाल को शांत चित बैठे देख कर तो वे बौखल से गये। हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और कमरे से बाहर निकल आये। ऐसी ही एक संभ्रात महिला तो कमरे से निकल कर फूट-फूट कर रोने लगी। जरा सोचिये, श्रीमती अग्रवाल जो दिन रात वहां रहती थी, उन पर क्या गुजरती होगी। वे घर भी नही जाती थी। अग्रवाल साहेब ने भी उन्हे घर जाने को कहा था। अग्रवाल साहेब की देखभाल के लिए इनका यहां रहना आवश्यक भी नहीं था। लेकिन वे नहीं गई- आखिर तक नहीं गई।

अग्रवाल साहेब और श्रीमती अग्रवाल ने आश्रम को अपना घर बना लिया और आश्रम वासियों को अपना

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

परिवार। आश्रम वासियों ओर उनकी सेवारत सभी के खाने पीने का सामान अब अग्रवाल साहेब की तरफ से आता। स्वयं श्रीमती अग्रवाल रसोई में जाती, वहां खाना बनाने में भाग लेती, आश्रम वासियों को खाना खिलाने जाती। आश्रम की कैंसर ग्रस्त महिलाओं के बालों में तेल लगाते, कंघी करते, बाल संवारते, उनसे बतियाते, उनकी सेवा करते उनका दुख दर्द बांटते, उन्हे रोज देखा जा सकता था।

अग्रवाल साहेब का खाना लेकर खुद जाती। उन्हें अपने हाथ से खिलाती। खाना खिलाते हुऐ आश्रम वासियों के दुख दर्द के बारे में बताती। आश्रम में अधिकांश गरीब तबके के लोग होते थे जो दूर दराज गांवों से आते थे। आश्रम रोगियों की हर ऐसी आवश्यकता जो आश्रम पूरा नहीं कर पाता, उसके बारे में अपने पति को बताती। किसी को अपने परिजन के इलाज के लिए रूपयों की आवश्यकता होती, किसी को अपने बेटे बेटी की फीस के लिए पैसे की, किसी को विपदा से उबरने के लिए आवश्यकता। अग्रवाल साहेब ने जैसे इन सब को सहायता करना अपना मक्सद बना लिया था। अग्रवाल साहेब ने मुझसे कहा था, "जानते हैं गांवो में कर्ज के बोझ का एक प्रमुख कारण होता है गंभीर रोग के लिए अकस्मात आवश्यक खर्चा। इस खर्च के लिए कर्ज के अलावा चारा नहीं होता, खास कर आज कल जब चिकित्सा इतनीं मंहगी हो गई है। कर्ज से उभरना मुश्किल हो जाता है। कर्ज परिवार को तोड देता है। आत्महत्या करने पर बाध्य कर देता है।"

अग्रवाल साहेब कभी अपने कमरे से बाहर नही निकले थे। न अन्य किसी रोगी से मिलने जाते थे। वे किसी को नगद रूपया भी नहीं भिजवाते थे। खाना खाने के बाद वे एक कागज लेकर श्रीमती अग्रवाल द्वारा बतायी गई आवश्यकताओं को कागज पर लिखते और फिर मोबाइल उठा कर अपने मातहत को विस्तृत निर्देश देते कि वह स्वयं जाकर, आवश्यक हो तो आश्रमवासी रोगी से मिल कर, उनकी आवश्यकता पूरी कर कर आये। आश्रम की रोज की आवश्यकता के लिए तो निर्देश होते ही थे।

श्रीमती अग्रवाल स्वयं मैस में जाकर सब कर्मचारियों के साथ वहीं खाना खाकर आतीं। वापस लौट कर आतीं तो अग्रवाल साहेब अपने बिस्तर पर बैठे हुए मिलते। श्रीमती अग्रवाल अलमारी से सिगरेट का पैकेट और माचिस लाती और एक सिगरेट उनके होठों के बीच अटका देती। उनके कैंसर से गले चहरे पर होठो के बीच जलती हुई सिगरेट बड़ी विकृत लगती, मन में जुर्गुप्सा जगाती। ऐसे ही समय जब मैं एक बार उनके कमरे में पहुंचा तो मैने कहा, "अग्रवाल साहेब, यह क्या? अब तो छोडिये इसे।"

अग्रवाल साहेब ने एकटक मेरी ओर देखा, आंखों में एक चमक सी आ गई। कागज कलम उठाये और उस पर लिखा, "नहीं, यह ठीक है। अब ज्यादा ठीक है। जो सिगरेट पीते हैं ओर जो पीना चाहते है उन्हे यह देखने दीजिए कि उन्हे किस स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए।"

कैंसर धीरे-धीरे बढ़ता गया। नाक, आंख, गाल और नीचे होठों की ओर बढ़ता गया। अगवाल साहेब नित एक शीशे में उस निर्मम प्रसार को देखते। उनके हाथ में छोटे से शीशे में अपने विकृत चहरे को देखते हुए देख कर विचित्र लगता था। लेकिन आखीर तक उनका जीने का क्रम वही रहा। श्रीमती अग्रवाल उन्हें छोड कर कभी नहीं गई। शांत चित उनका सहारा बनी रही, सब कुछ स्वयं सहा, उनको कभी विचलित नही होने दिया, कभी स्वयं विचलित नही हुई। अन्य अंत: स्थित कैसर रोगियों के दुख बांट कर नहीं, उनके दुख-दर्द बटोर कर, उनके लिए सार्थक कुछ कर उन्हें शक्ति मिलती थी; सहने की सामर्थ्य, जीने का संबल।

अग्रवाल साहेब को तो अपना रोग भुगतना था जो उन्होने साहस से किया। लेकिन जिस समर्पित भाव से श्रीमती अग्रवाल ने उनके साथ रह कर, उनका संबल बन कर, उस स्थिति को स्वयं जिया, वह विलक्षण था। जिस भगवान के चित्र के सामने श्रीमती अग्रवाल पूजा करती थी वह अब भी उस कमरे में लगा है। भारतीय महिला के सात्विक संस्कार को नमन। श्रीमती अग्रवाल को शत शत नमन।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

उत्सवधर्मिता के कारण चुनाव आयोग का बदला निर्णय

हिन्दुस्तान में लोकसभा और विधान सभाओं के चुनावों करवाने की जिम्मेदारी चुनाव आयोग की है। भारतीय संविधान के अनुसार हर पांच साल बाद नयी सरकार का गठन किया जाता है । चुनाव आयोग पूरी तरह से स्वतंत्र ईकाई है, उस पर किसी भी प्रकार का सरकारी नियंत्रण नहीं होता । लोकतांत्रिक मूल्यों को बचाये रखने की जिम्मेदारी लगभग चुनाव आयोग की होती है । दशकों पहले देश के मतदाताओं को चुनाव आयोग का महत्व टी.एन.शेषन ने समझाने की कोशिश की थी , जिसमें कुछ हद तक वें सफल भी रहे परन्तु फिलहाल उनके बाद चुनाव आयोग को फिर से अपनी पहचान बताने की जरुरत है । उत्सवधर्मिता को जीवित रखने वाला भारत दुनिया में जाना जाता है, विभिन्न रंगों से सराबोर रही है इसकी संस्कृति, यहाँ अलग-अलग प्रदेशों में वर्ष भर त्योहार मनाये जाते हैं।

चुनाव में मतदाताओं के साथ-साथ मतदान दलों के लोग भी उसी संस्कृति में रचे-बसे होते हैं। चुनावों के दौरान सैकड़ों

राजेन्द्र जोशी

लोगों को रोजगार भी मिलता है, गाडियां किराये पर लगना , पोस्टर, बैनर, पेम्पलेट इत्यादि छपायी का सीजन बन जाता है इन कामों में लगे स्थानीय लोगों के लिए उत्सव मनाने में अधिक रूचि रहती है। चुनावों की तारीखों के ऐलान करने से पहले उस प्रदेश की कानून- व्यवस्था के साथ ही वहां के इतिहास, संस्कृति और स्थानीय लोगों के तीज-त्यौहार के अवसरों को पहचानने की कोशिश करते हुए मतदान दिवस की घोषणा करनी चाहिए । इन दिनों पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव का उत्सव के रंग देखे जा सकते हैं । चुनाव आयोग को पंजाब में अपनी ही तारीखों को बदलना पड़ा है, यह चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े करती है। तारीखों की घोषणा से पहले संत रविदास की लोकप्रियता को चुनाव आयोग को रेखांकित करना चाहिए, उसे पंजाब के तीज-त्यौहारों की पुख्ता जानकारी स्थानीय प्रशासन से लेनी चाहिए । बात केवल मतदान तिथि को परिवर्तित करने तक सीमित नहीं है परन्तु एक बड़े कृषि प्रधान प्रदेश की आस्था का भी है जिसकी वजह से चुनाव आयोग को अपने ही फैसले पर प्रश्न चिह्न लगा है । पंजाब सरकार और वहाँ के राजनैतिक दलों को सलाम करना चाहिए जिन्होंने चुनाव आयोग को उनकी भूल को समय रहते जगा दिया जिससे वहां की स्वीप गतिविधियों के माध्यम से मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी अवश्य होगी।

राजेन्द्र जोशा
वरिष्ठ साहित्यकार, कवि कथाकार

जैसलमेर वायुशक्ति में पहली बार महिला पायलट शौर्य दिखाएंगी

जैसलमेर, (नि.सं.)। देश के उत्तरी मोर्चे पर चीनी सेना और पश्चिमी मोर्चे पर पाकिस्तान की चुनौती का सामना कर रही भारतीय वायु सेना राजस्थान के पोकरण फील्ड फायरिंग में अब तक का सबसे बड़ा युद्धाभ्यास करने जा रही है। फाइटरों के हिस्सेदारी , ट्रेनिंग कॉम्बैट उड़ानों और हवाई ताकत के प्रदर्शन के मॉडलों के हिसाब से इसे सबसे व्यापक और अभूतपूर्व वॉरगेम बताया जा रहा है। मिग -21 बाइसन लड़ाकू विमान की उड़ान के साथ पहली बार वायु शक्ति में महिला पायलट शौर्य दिखाएंगी। वायु सेना अब तक 10 महिला पायलट लड़ाकू भूमिका में शामिल हो चुकी हैं। इनमें से कम से कम तीन पायलट इस बार के बड़े अभ्यास में शामिल हो सकती हैं। इसके साथ ही रफाल के सभी 36 विमानों की आपूर्ति फरवरी के पहले सप्ताह में पूरी हो रही है।

सूत्रों के अनुसार वायु शक्ति के 10 से 12 फरवरी के पूर्ण अभ्यास में इन सभी की एक्टिव हिस्सेदारी होगी। तीन साल में एक बार होने वाले वायु शक्ति अभ्यास में देशभर में वायु सेना की यूनिटें सक्रिय हिस्सेदारी कर रही है। पिछले 20 महीने से उत्तरी मोर्चे पर चीन के साथ तनातनी के कारण वायु सेना अतिरिक्त अलर्ट है। वायु शक्ति में करीब 140 विमानों की हिस्सेदारी होगी। करीब 100 फाइटर प्लेन लेंगे।

पोकरण रेंज में बनाए गए दुश्मन के ठिकानों को तबाह करने के अभ्यास में अनेक तरह की मिसाइलों और फाइटरों का इस्तेमाल होगा। रफाल की अत्याधुनिक मिका मिसाइल इसका विशेष आकर्षण होगी। सुखोई 30 एमकेआई, मिग 29, एलसीए तेजस, मिराज 2000, मिग 21 बाइसन, हॉक और जगुआर विमान भी अपने इसमें शामिल होंगे। अपाचे हेलीकॉप्टर और शिनूक के साथ भारत के ध्रुव भी नाइट आपरेशंस में हिस्सा लेंगे। रात के आपरेशन में लड़ाकू हेलीकाप्टरों से टारगेट्स पर राकेटों की बौछार दिखेगी । वायु शक्ति मे डीसीए- डिफेंसिव काउंटर एयर , ओसीए - ऑफेंसिव काउंटर एयर , सीएएस - काउंटर एयर स्ट्राइक , सीईएडी - सप्रेस एनिमी एयर डिफेंस , टीओओ टारगेट ऑफ अपार्चुनिटी आदि ऑपरेशन होंगे।

मेधावी छात्रों को 3 साल से लैपटॉप वितरण करना भूली राज्य सरकार

- शिक्षक संघ ने छात्रों को लैपटाप वितरण की मांग`की

चाकसू, (निसं)। पिछले करीब दो साल से स्कूलों पर ताले लटक रहे हैं। विद्यार्थी ऑनलाइन पढ़ाई पर पूरी तरह से निर्भर हैं, लेकिन ये ऑनलाइन पढ़ाई भी दूर-दराज स्थित गांवों तक नहीं पहुंच पा रही है।

इसी समस्या में कोढ़ में खाज का काम कर रही है शिक्षा विभाग की महत्वाकांक्षी लैपटॉप वितरण योजना, राजस्थान सरकार की स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने और डिजीटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई लैपटॉप वितरण योजना पिछले तीन सालों से ठंडे बस्ते में पड़ी है। राजस्थान प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षक संघ जिला शाखा जयपुर ने राज्य सरकार से मेधावी छात्रों के लिए बनी लेपटॉप योजना को गति देने का आग्रह किया है। संघ के जिलाध्यक्ष रामस्वरूप गुर्जर एवं स्थानीय अध्यक्ष गणेश नारायण यादव ने मेधावी छात्रों को कक्षा 8 ,10 व 12 वीं में मिलने वाले लैपटॉप दिलाने की मांग की है । यह योजना एक लाख से कम आय वाले अभिभावकों के मेधावी छात्रों के लिए है। जब राज्य सरकार विद्यार्थियों को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें स्कूलों में उपलब्ध करवा सकती है तो लैपटॉप क्यों नहीं । राजस्थान के अधिकांश निर्धन बच्चे सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत हैं यदि उन्हें लैपटॉप मिल जाता तो ऑनलाइन शिक्षण में उन्हें सुगमता होती। इस संबंध में ग्रामीण छात्र-छात्राओं का कहना है कि ग्रामीण इलाकों में शिक्षा विभाग से समय से लैपटॉप दिया जाता तो ऑनलाइन क्लास लेने में आसानी रहती।

सालों बाद अब बदलेगा आपके घर के सिलैण्डर का रंग-ढंग

- इंडियन ऑयल ने फाइबर के गैस सिलेंडर किए लॉन्च,
- पहले के सिलेंडर के बजाय सेफ रहेगा नया सिलेंडर

झुंझुनूं,(निसं)। आपने होश संभाला तब से आपने लोहे के, लाल रंग के वजनी गैस सिलेंडरों को ही देखा है। लेकिन अब यह सिलेंडर अपना रंग, रूप और काफी कुछ बदल रहा है। पहले सिलेंडर की गैस खत्म होने की बाद ही पता चलता था कि अब गैस खत्म हो गई है लेकिन नए सिलेंडर में यह भी आसानी से पता चलेगा कि कितनी गैस और सिलेंडर में शेष है। ताकि हम दूसरे सिलेंडर की व्यवस्था कर सकें ।

झुंझुनूं में इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड की ओर से इंडेन उपभोक्ताओं के लिए फाइबर के नए रसोई गैस सिलेंडर लॉन्च किए गए । नगर परिषद में हुए लोकार्पण समारोह की मुख्य अतिथि सभापति नगमा बानो थी और अध्यक्षता जिला रसद अधिकारी कपिल झाझड़िया ने की। शेखावाटी गैस सर्विस के संचालक रामसिंह कुमावत तथा क्षेत्रीय बिक्री अधिकारी किरण बुडानिया ने बताया कि इसमें 5 किलो और 10 किलोग्राम वेट में सिलेंडर जारी किए है। कार्यक्रम में सभापति नगमा बानो व अन्य अतिथियों ने फाइबर सिलेंडर का लोकार्पण किया और पहले ग्राहक को सिलेंडर कनेक्शन प्रदान किया। इस दौरान भाजपा युवा नेता राजेश बाबल समेत अन्य मौजूद रहे।

10 किलोग्राम कंपोजिट सिलेंडर हुआ लॉन्च: सिलेंडर को आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। इस सिलेंडर से ऐसी दुविधा नहीं रहेगी। उपभोक्ता पुराने गैस सिलेंडर को गैस एजेंसी में जमा करवाकर और डिफरेंस राशि जमा करवाकर बदले में नया सिलेंडर ले सकते हैं।

झुंझुनूं में इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड की ओर से इण्डेन उपभोक्ताओं के लिए फाइबर के नए रसोई गैस सिलेंडर लॉन्च किए गए

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 19 जनवरी, 2022

माघ मास कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2078, अश्लेषा नक्षत्र गुरूवार प्रात: 8:24 तक, प्रीति योग सायं 4:05 तक, तैतिल करण सायं 7:29 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में। शनि अस्त पश्चिम प्रात: 7:33 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:59 तक, शुभ 11:18 से 12:17 तक, चर 3:14 से 4:35 तक, लाभ 4:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:25, सूर्यास्त 5:54

मेष
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति संतोषप्रद रहेगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मिथुन
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी अनबन-मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क
अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष और भय बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित उचित परामर्श मिलेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मकर
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मीन
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।